फातिमा और तम्बू

इदरीस शाह

फातिमा और तम्बू

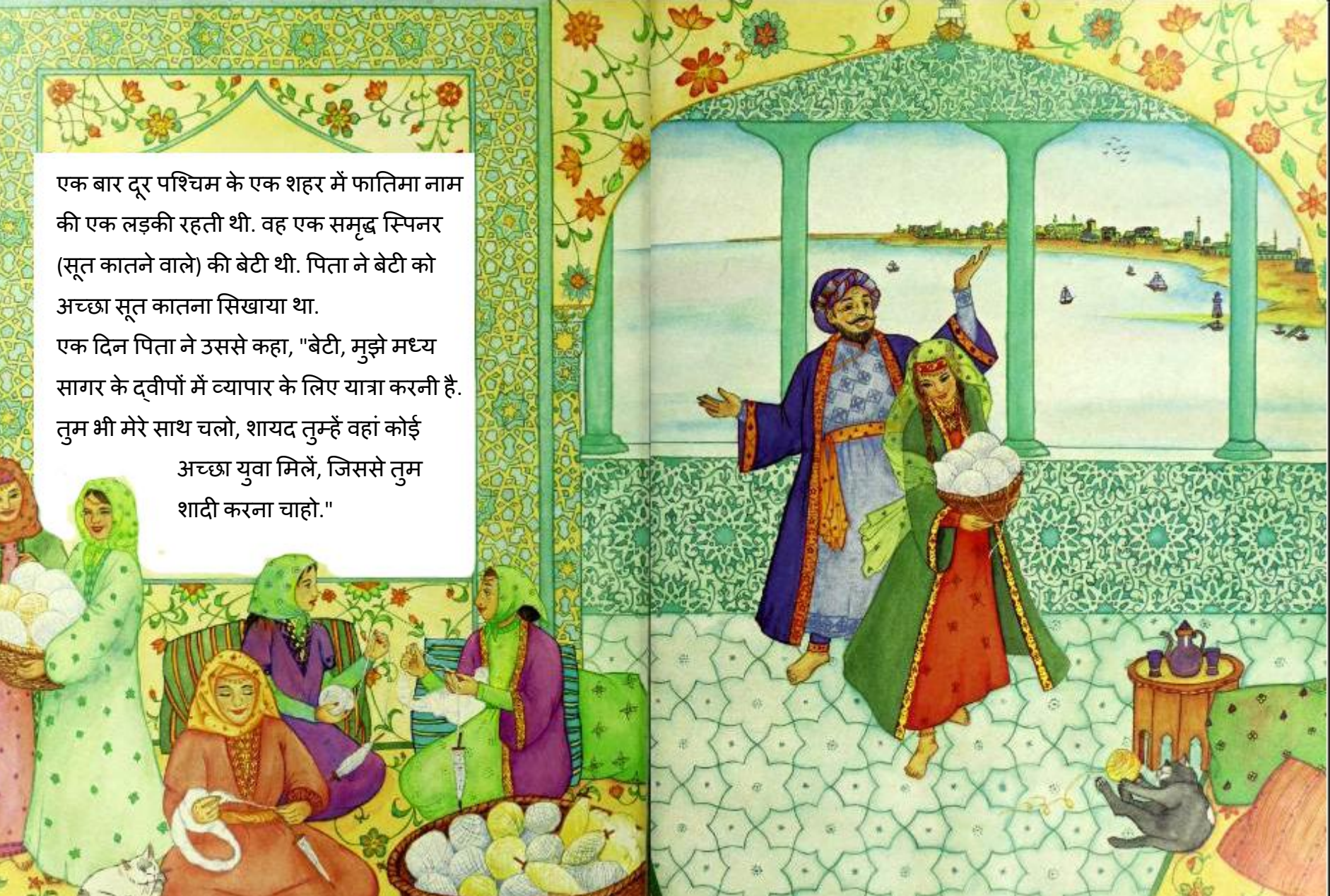

एक बार दूर पश्चिम के एक शहर में फातिमा नाम की एक लड़की रहती थी. वह एक समृद्ध स्पिनर (सूत कातने वाले) की बेटी थी. पिता ने बेटी को अच्छा सूत कातना सिखाया था.

एक दिन पिता ने उससे कहा, "बेटी, मुझे मध्य सागर के द्वीपों में व्यापार के लिए यात्रा करनी है. तुम भी मेरे साथ चलो, शायद तुम्हें वहां कोई अच्छा युवा मिलें, जिससे तुम शादी करना चाहो."

फिर उन्होंने अपनी यात्रा शुरू की और एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक यात्रा की. पिता ने व्यापार किया और फातिमा एक अच्छा पति पाने का सपना देखती रही. पर एक दिन जब वे क्रेते के रास्ते में थे तब एक भयानक तूफान आया, जिसमें उनका जहाज टूट गया.

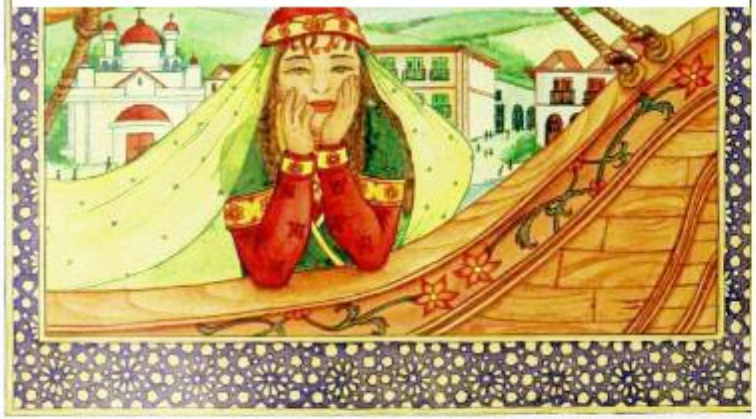

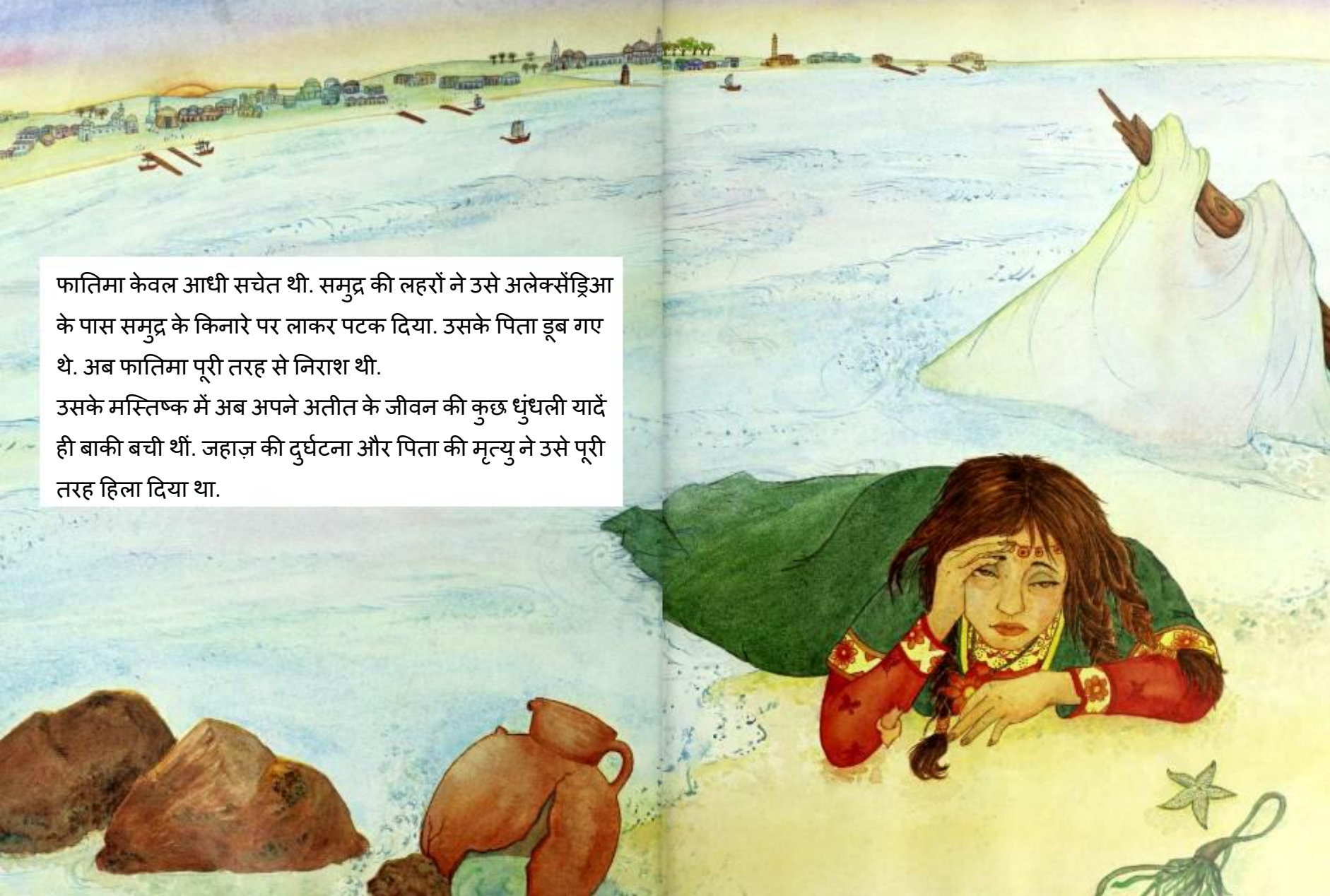

फातिमा केवल आधी सचेत थी. समुद्र की लहरों ने उसे अलेक्सेंड्रिआ के पास समुद्र के किनारे पर लाकर पटक दिया. उसके पिता डूब गए थे. अब फातिमा पूरी तरह से निराश थी.

उसके मस्तिष्क में अब अपने अतीत के जीवन की कुछ धुंधली यादें ही बाकी बची थीं. जहाज़ की दुर्घटना और पिता की मृत्यु ने उसे पूरी तरह हिला दिया था.

जब वो रेत पर भटक रही थी, तब बुनकरों के एक परिवार ने उसे ढूँढा. हालाँकि वे गरीब थे, लेकिन फिर भी वे उसे प्रेम से अपने घर ले गए और उन्होंने कपड़ा बुनने का अपना कौशल उसे सिखाया.

इस प्रकार फातिमा ने अब एक दूसरी ज़िंदगी शुरू की. एक-दो साल बाद वह अब दुबारा खुश थी और अपने नए जीवन से खुश थी.

लेकिन एक दिन, जब वो समुद्र के किनारे पर घूम रही थी, तभी गुलाम पकड़ने वाले व्यापारियों का एक दस्ता वहां आया और वो अन्य बंदियों के साथ फातिमा को भी अपने साथ बहुत दूर ले गया.

हालाँकि वो अपनी नई स्थिति से बहुत दुखी थी, लेकिन उन गुलाम-व्यापारियों ने फातिमा के साथ कोई सहानुभूति नहीं दिखाई. व्यापारी उसे गुलाम के रूप में बेचने के लिए इस्तानबुल ले गए.

अब फातिमा की दुनिया दूसरी बार तबाह हो गई थी.

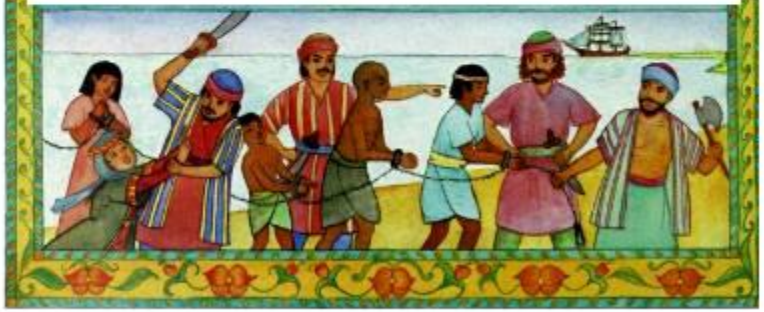

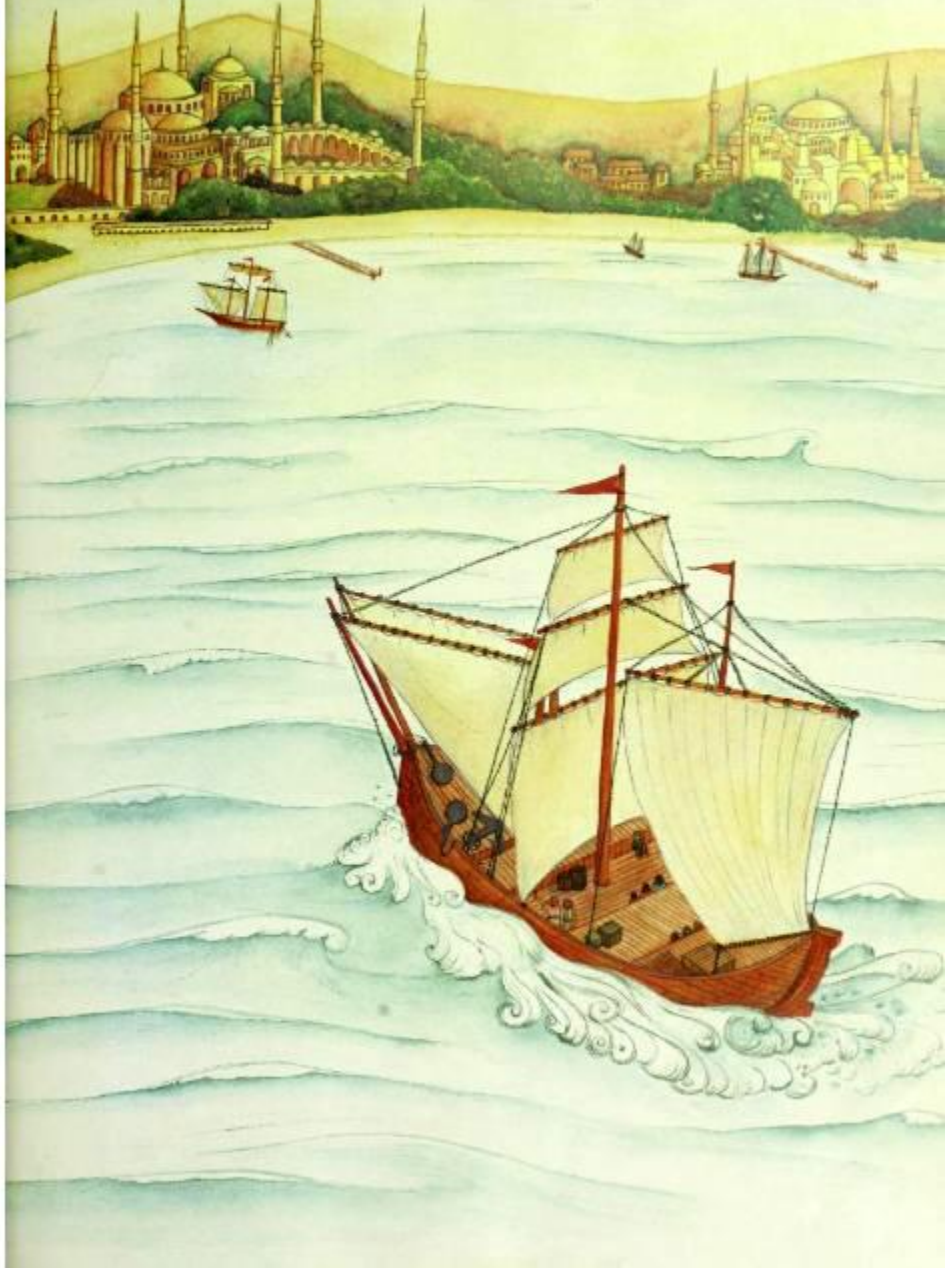

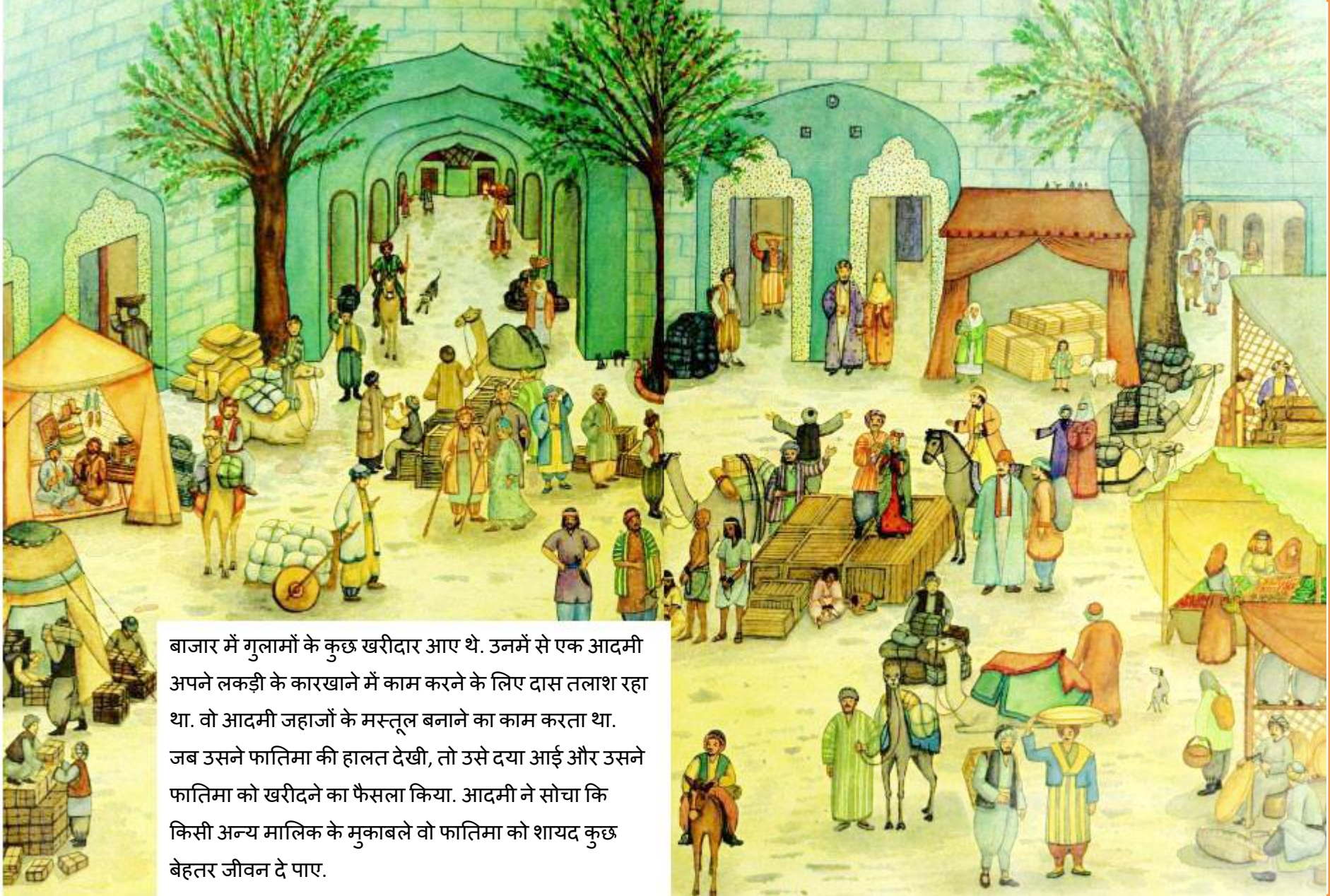

बाजार में गुलामों के कुछ खरीदार आए थे. उनमें से एक आदमी अपने लकड़ी के कारखाने में काम करने के लिए दास तलाश रहा था. वो आदमी जहाजों के मस्तूल बनाने का काम करता था. जब उसने फातिमा की हालत देखी, तो उसे दया आई और उसने फातिमा को खरीदने का फैसला किया. आदमी ने सोचा कि किसी अन्य मालिक के मुकाबले वो फातिमा को शायद कुछ बेहतर जीवन दे पाए.

वो आदमी फातिमा को अपने घर ले गया. उसका इरादा फातिमा को अपनी पत्नी की नौकरानी बनाने का था. जब वे घर पहुंचा तो उसे एक बुरी खबर मिली. जिस जहाज पर उसका माल लद कर जा रहा था उसे समुद्री डाकुओं ने पकड़ लिया था. अब वो आदमी लुट गया था. अब उसकी औकात मज़दूर रखने की नहीं रही थी. अब वो फातिमा और अपनी पत्नी के साथ मिलकर मस्तूल बनाने का काम करने को मज़बूर था.

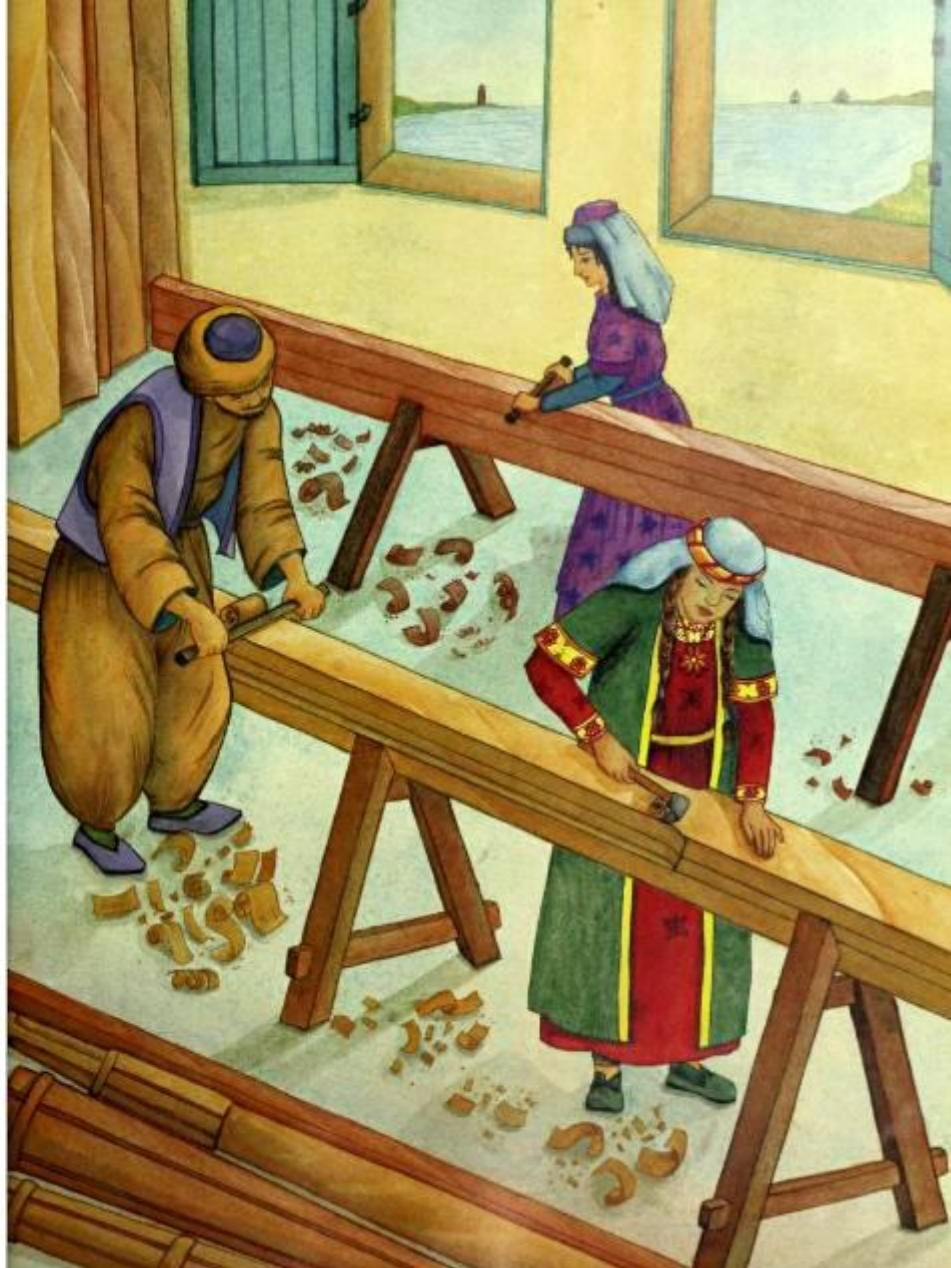

फातिमा, गुलाम-व्यापारियों के चंगुल से बचाने के लिए उस अच्छे आदमी की आभारी थी. फातिमा ने इतनी मेहनत और लगन से काम किया कि आदमी ने खुश होकर उसे गुलामी से मुक्त कर दिया.
फिर फातिमा उस आदमी की एक विश्वसनीय सहायक बन गई.
अब फातिमा मस्तूल बनाने में बहुत कुशल हो गई थी.
वो मस्तूल बनाने के अपने तीसरे कैरियर से काफी खुश थी.
एक दिन उस आदमी ने फातिमा से कहा. "मैं चाहता हूं कि तुम मेरे एजेंट के रूप में जहाज में माल लेकर जावा जाओ, और मेरे माल को ऊंचे मुनाफे में बेंचो."

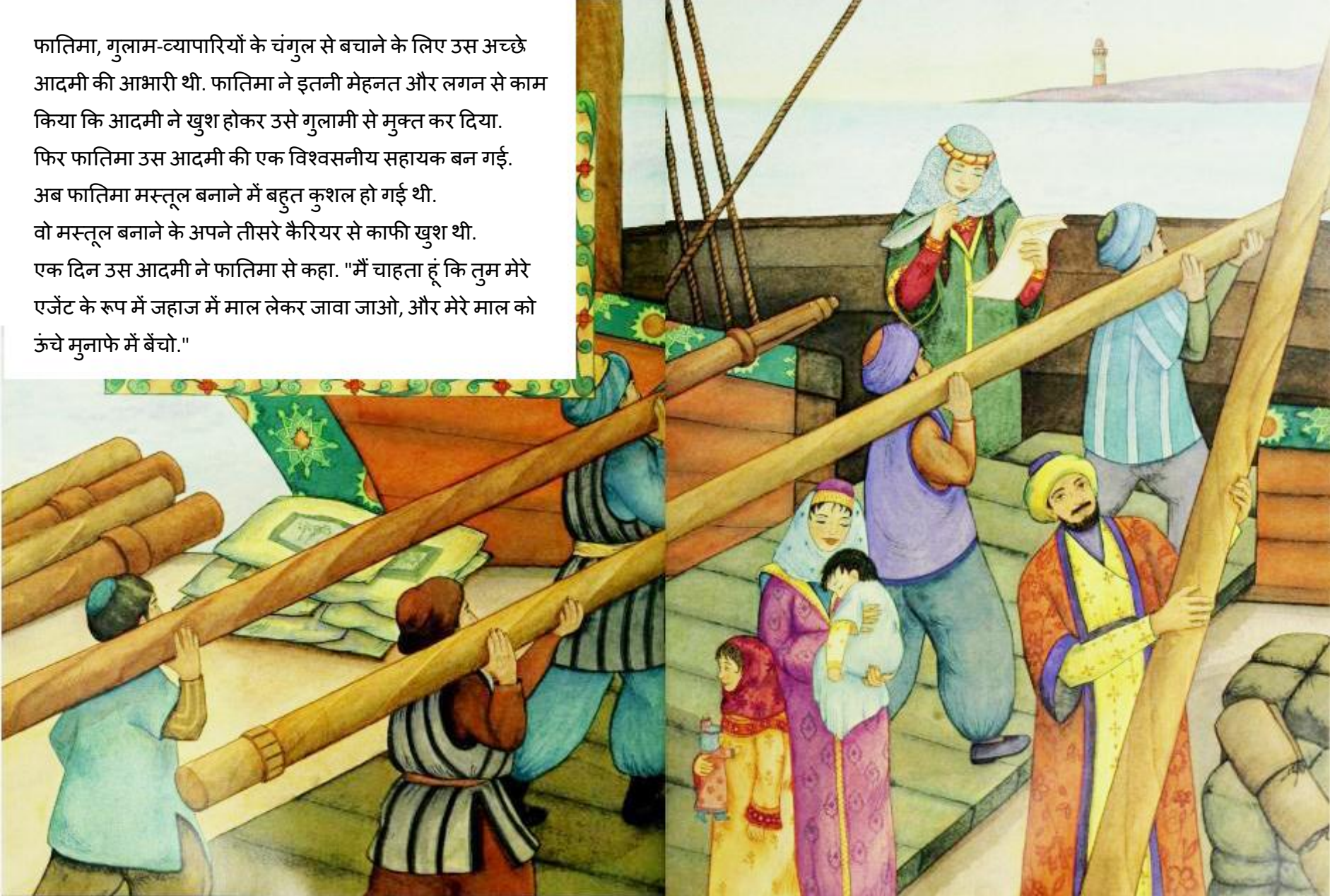

फातिमा ने अपनी यात्रा शुरू की. लेकिन जब जहाज चीन के तट के पास पहुंचा तो एक भयानक तूफान ने उसके जहाज़ को नष्ट कर दिया. समुद्र की लहरों ने एक बार फिर से फातिमा को समुद्र तट पर लाकर पटक दिया.

फातिमा फूट-फूट कर रोई. क्योंकि अब उसके जीवन की सभी उम्मीदें ख़त्म हो गईं थीं. अब आशा की कोई किरण बाकी नहीं बची थी. अब जब चीजें ठीक होती दिख रही थीं, तभी तूफ़ान ने उसकी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया था.

"मेरी तकदीर इतनी फूटी क्यों है?" वो रोई. "मैं जो कुछ भी करने की कोशिश करती हूँ उसका अंत दुःखद ही क्यों होता है? मेरे साथ ही इतनी दुर्भाग्यपूर्ण चीजें क्यों होती हैं?" लेकिन उसे अपने प्रश्नों का कोई जवाब नहीं मिला.

फिर उसने खुद को रेत से उठाया और चलना शुरू किया.

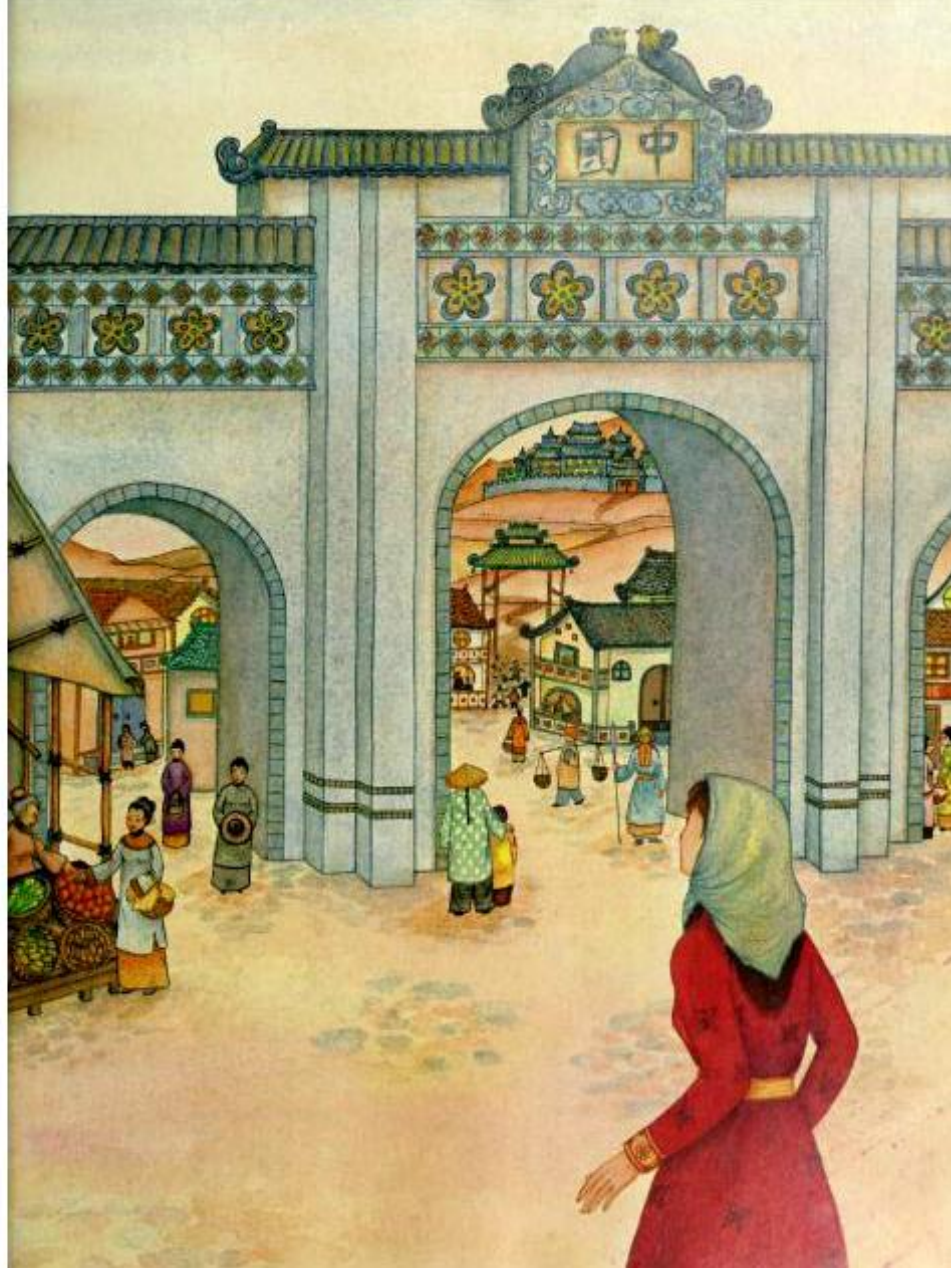

चीन में किसी ने भी फातिमा के बारे में नहीं सुना था. कोई भी उसकी परेशानियों के बारे में नहीं जानता था. लेकिन चीन में एक लोकप्रिय किंवदंती थी - कि एक अजनबी महिला चीन पहुंचेगी और वो चीन के सम्राट के लिए एक तम्बू बनाएगी. चीन में तब तक कोई भी तम्बू (टेंट) बनाना नहीं जानता था, इसलिए वहां के लोग इस भविष्यवाणी की पूर्ती का बड़ी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे.

चीन के सम्राट ने यह सुनिश्चित करना चाहता था कि अगर ऐसी कोई अजनबी महिला वहां आए, तब वो कहीं गलती से छूट न जाए. इसलिए, साल में एक बार, सम्राट, देश के सभी कस्बों और गांवों में पुलिस का एक विशेष दस्ता भेजता था. दस्ते का काम हरेक विदेशी महिला को अदालत में पेश करना था.

जब फातिमा समुद्र के किनारे के एक शहर में थकी-मांदी पहुंची, तो इत्तिफाक से पुलिस का वो विशेष दस्ता उस समय वहां मौजूद था. पुलिस ने एक दुभाषिए की मदद से फातिमा को समझाया कि उसे सम्राट के सामने पेश होना होगा.

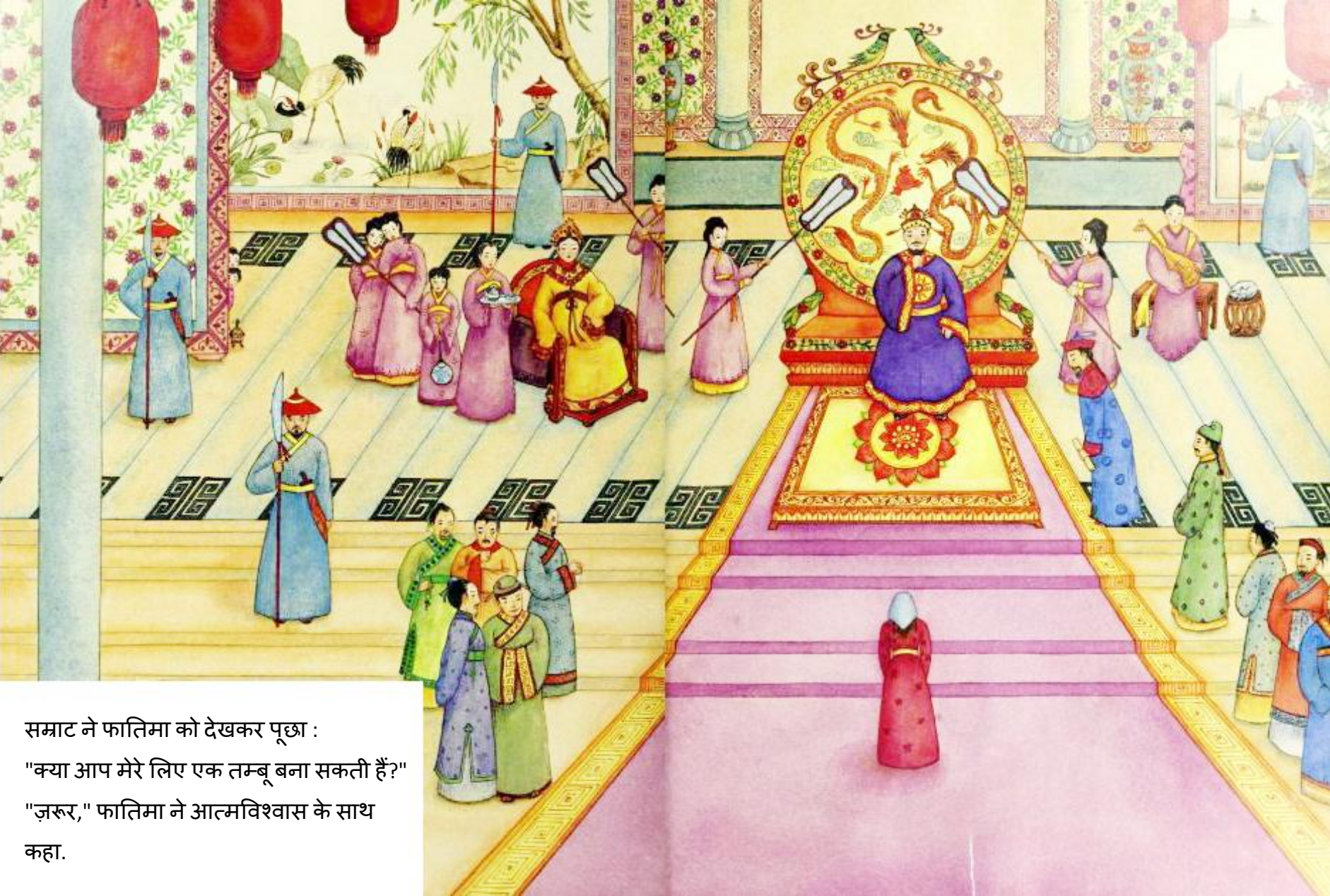

सम्राट ने फातिमा को देखकर पूछा :
"क्या आप मेरे लिए एक तम्बू बना सकती हैं?"
"ज़रूर," फातिमा ने आत्मविश्वास के साथ कहा.

फिर फातिमा ने रस्सी मांगी, लेकिन वहाँ उसे कोई रस्सी नहीं मिली.

पर फातिमा के पिता ने उसे बचपन में अच्छी कताई सिखाई थी. इसलिए फातिमा ने सन इकट्ठा किया और उससे खुद रस्सी बनाई.

फिर उसने मजबूत कपड़ा (कैनवस) माँगा लेकिन चीन में कैनवस उपलब्ध नहीं था. पर क्योंकि फातिमा ने अलेक्जेंड्रिया में बुनकरों के साथ काम किया था, इसलिए उसने खुद से मजबूत तम्बू का कपड़ा बनाया.

फिर उसे तम्बू बनाने के लिए मज़बूत बल्लियों (टेंट-पोल्स) की जरूरत थी. लेकिन वे भी चीन में उपलब्ध नहीं थे. पर फातिमा ने इस्तानबुल में जहाज़ों के मस्तूल बनाने की ट्रेनिंग ली थी. उस अनुभव के आधार पर फातिमा ने मजबूत तम्बू-पोल बनाए.

जब सारा सामान तैयार हो गया, तब उसने अपनी यात्रा में जितने भी तम्बू देखे थे, उन सभी के डिज़ाइनों के बारे में सोचा ...

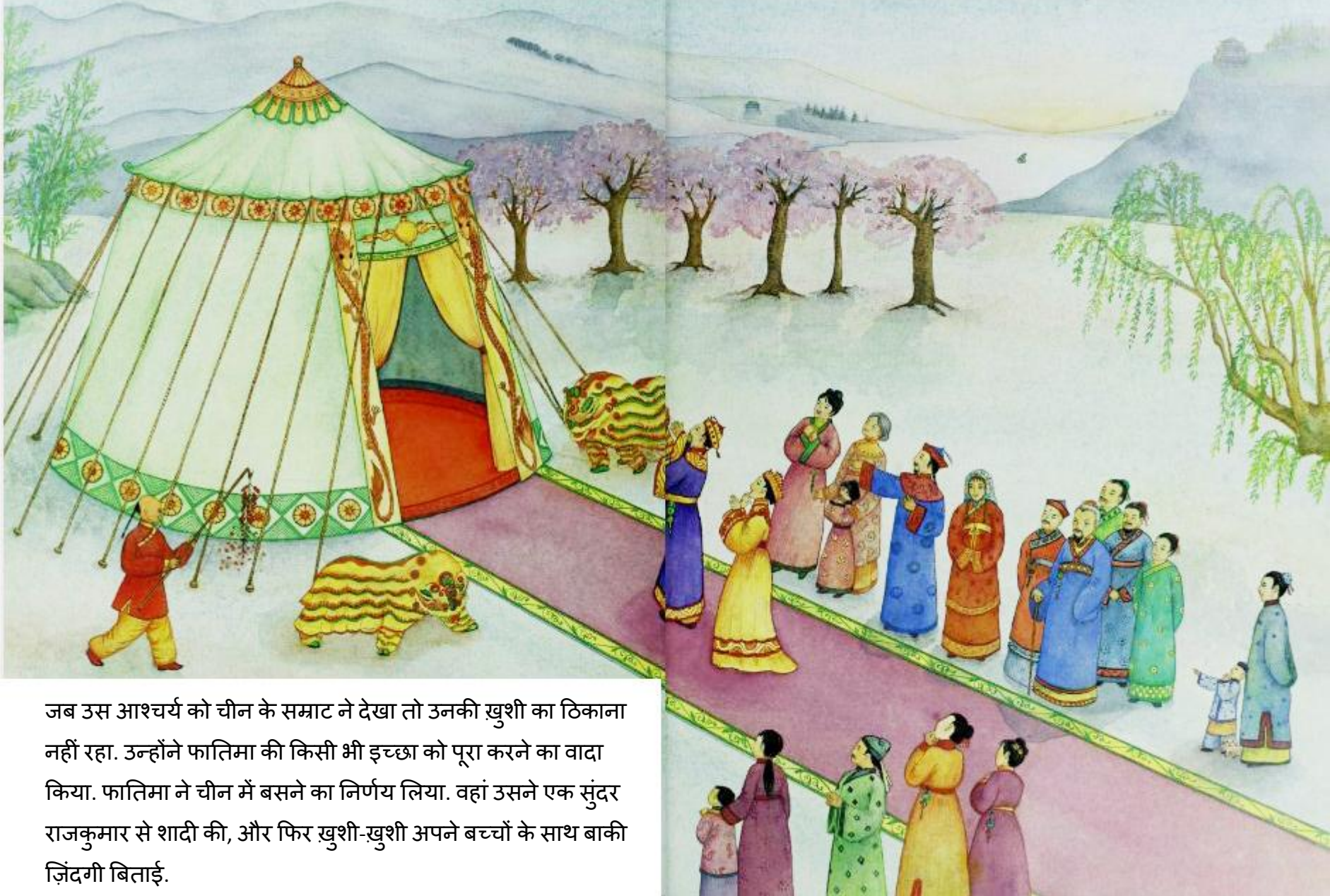

जब उस आश्चर्य को चीन के सम्राट ने देखा तो उनकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा. उन्होंने फातिमा की किसी भी इच्छा को पूरा करने का वादा किया. फातिमा ने चीन में बसने का निर्णय लिया. वहां उसने एक सुंदर राजकुमार से शादी की, और फिर ख़ुशी-ख़ुशी अपने बच्चों के साथ बाकी ज़िंदगी बिताई.

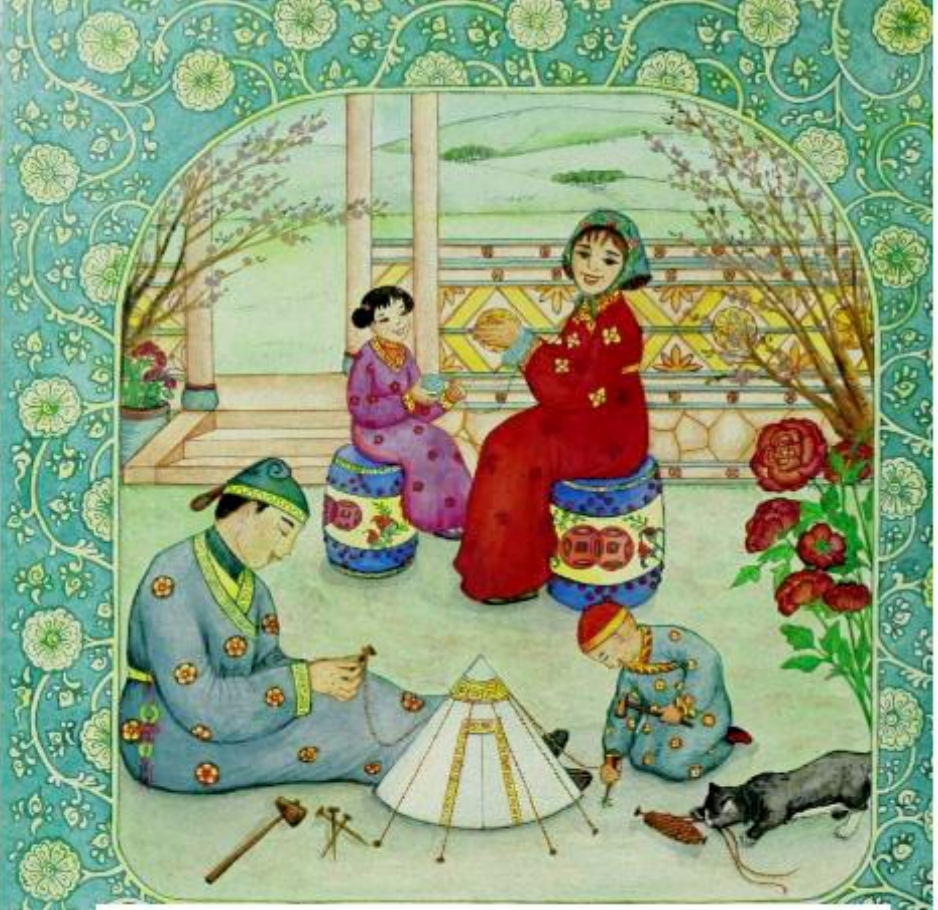

फातिमा ने महसूस किया कि शुरू में उसे जो अनुभव अप्रिय लगे थे, लेकिन अंत में वही उसके सुख का एक अनिवार्य हिस्सा बने.

समाप्त